

سُورَةُ الذَّارِيَّاتِ

Surah 51 — Adh-Dhaariyat (The Winnowing Winds) · Meccan · 60 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالذُّرِّيَّتِ ذُرَّوْا؟۱

उन (हवाओं की क़सम) जो (बादलों को) उड़ा कर तितर बितर कर देती हैं

2

فَالْحُمِلْتُ وَقُرَّ؟ ١

फिर (पानी का) बोझ उठाती हैं

3

فَالْجَرِيْتُ يُسْرَ ۚ

फिर आहिस्ता आहिस्ता चलती हैं

4

فَالْمَقْسِمَةُ أَمْرٌ

फिर एक ज़रूरी चीज़ (बारिश) को तक्रसीम करती हैं

5

إِنَّمَا تُوْعَدُونَ لَصَادِقٍ ؟

कि तुम से जो वायदा किया जाता है ज़रूर बिल्कुल सच्चा है

6

وَأَنَّ الدِّينَ لَوَقْعٌ ²⁸ ؟

और (आमाल की) जज़ा (सज़ा) ज़रूर होगी

7

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ

और आसमान की क़सम जिसमें रहते हैं

8

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝۹

कि (ऐ अहले मक्का) तुम लोग एक ऐसी मुख्तलिफ़ बेजोड़ बात में पड़े हो

9

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝۱०

कि उससे वही फेरा जाएगा (गुमराह होगा)

10

قُتِلَ الْخَرِصُونَ ۝۱१

जो (खुदा के इल्म में) फेरा जा चुका है अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों

11

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ ۝۱२ سَاهُونَ

जो ग़फ़लत में भूले हुए (पड़े) हैं पूछते हैं कि जज़ा का दिन कब होगा

12

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۝۱३

उस दिन (होगा)

13

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝۱४

जब इनको (जहन्नुम की) आग में अज़ाब दिया जाएगा

14

ذُوقُوا ۝۱५ فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ ۝۱६ تَسْتَعْجِلُونَ

(और उनसे कहा जाएगा) अपने अज़ाब का मज़ा चखो ये वही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे

15

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ ۝۱७ وَعُيُونٍ

बेशक परहेज़गार लोग (बेहिश्त के) बाग़ों और चश्मों में (ऐश करते) होंगे

16

ءَاخِذِينَ مَا ءَاتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا ۚ قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ

जो उनका परवरदिगार उन्हें अता करता है ये (खुश खुश) ले रहे हैं ये लोग इससे पहले (दुनिया में) नेको कार थे

17

كَانُوا ۗ قَلِيلًا ۚ مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ

(इबादत की वजह से) रात को बहुत ही कम सोते थे

18

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ

और पिछले पहर को अपनी मग़फ़िरत की दुआएं करते थे

19

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ ۖ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ

और उनके माल में माँगने वाले और न माँगने वाले (दोनों) का हिस्सा था

20

وَفِي الْأَرْضِ ءَايَاتٌ ۖ لِلْمُوقِنِينَ

और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

21

وَفِي أَنْفُسِكُمْ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

और खुदा तुम में भी हैं तो क्या तुम देखते नहीं

22

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ

और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है आसमान में है

23

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ ۖ لَحَقُّ ۚ مِثْلَ مَا أَنْكُمْ تَنْطِقُونَ

तो आसमान व ज़मीन के मालिक की क़सम ये (कुरान) बिल्कुल ठीक है जिस तरह तुम बातें करते हो

24

هَلْ أَتَتْكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ

क्या तुम्हारे पास इबराहीम के मुअज़िज़ मेहमानों (फ़रिश्तों) की भी ख़बर पहुँची है कि जब वह लोग उनके पास आए

25

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ ۗ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ

तो कहने लगे (सलामुन अलैकुम) तो इबराहीम ने भी (अलैकुम) सलाम किया (देखा तो) ऐसे लोग जिनसे न जान न पहचान

26

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ ۖ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ

फिर अपने घर जाकर जल्दी से (भुना हुआ) एक मोटा ताज़ा बछड़ा ले आए

27

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ ۖ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ

और उसे उनके आगे रख दिया (फिर) कहने लगे आप लोग तनाउल क्यों नहीं करते

28

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَيَشَرُّهُ بِعِلْمٍ عَلِيمٍ

(इस पर भी न खाया) तो इबराहीम उनसे जो ही जी में डरे वह लोग बोले आप अन्देशा न करें और उनको एक दानिशमन्द लड़के की खुशखबरी दी

29

فَأَقْبَلَتْ امْرَأَتُهُ ۖ فِي صَرَّةٍ ۖ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ

तो (ये सुनते ही) इबराहीम की बीवी (सारा) चिल्लाती हुई उनके सामने आयीं और अपना मुँह पीट लिया कहने लगीं (ऐ है) एक तो (मैं) बुढ़िया (उस पर) बांझ

30

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ ۖ إِنَّهُ ۖ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

लड़का क्यों कर होगा फ़रिश्ते बोले तुम्हारे परवरदिगार ने यूँ ही फरमाया है वह बेशक हिकमत वाला वाकिफ़कार है

31

ۖ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ

तब इबराहीम ने पूछा कि (ऐ खुदा के) भेजे हुए फरिश्तों आखिर तुम्हें क्या मुहिम दर पेश है

32

قَالُوا ۖ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ

वह बोले हम तो गुनाहगारों (क्रौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं

33

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً ۖ مِنْ طِينٍ ۖ

ताकि उन पर मिट्टी के पथरीले खरन्जे बरसाएँ

34

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ

जिन पर हद से बढ़ जाने वालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशान लगा दिए गए हैं

35

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

गरज वहाँ जितने लोग मोमिनीन थे उनको हमने निकाल दिया

36

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ ۖ مِنَ الْمُسْلِمِينَ

और वहाँ तो हमने एक के सिवा मुसलमानों का कोई घर पाया भी नहीं

37

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً ۖ لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

और जो लोग दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं उनके लिए वहाँ (इबरत की) निशानी छोड़ दी और मूसा (के हाल) में भी (निशानी है)

38

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ

जब हमने उनको फिरऔन के पास खुला हुआ मौजिज़ा देकर भेजा

39

فَتَوَلَّىٰ بُرْكُنِهِ ۖ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۖ

तो उसने अपने लशकर के बिरते पर मुँह मोड़ लिया और कहने लगा ये तो (अच्छा खासा) जादूगर या सौदाई है

40

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ ۖ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۚ

तो हमने उसको और उसके लश्कर को ले डाला फिर उन सबको दरिया में पटक दिया

41

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ

और वह तो क्राबिले मलामत काम करता ही था और आद की क्रौम (के हाल) में भी निशानी है हमने उन पर एक बे बरकत आँधी चलायी

42

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرِّمِيمِ

कि जिस चीज़ पर चलती उसको बोसीदा हडडी की तरह रेज़ा रेज़ा किए बग़ैर न छोड़ती

43

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا ۚ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ

और समूद (के हाल) में भी (कुदरत की निशानी) है जब उससे कहा गया कि एक खास वक्त तक खूब चैन कर लो

44

فَعَتَوْا ۚ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ

तो उन्होंने अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की तो उन्हें एक रोज़ कड़क और बिजली ने ले डाला और देखते ही रह गए

45

فَمَا أَسْتَطِعُوا ۚ مِنْ قِيَامٍ ۚ وَمَا كَانُوا ۚ مُتَّصِرِينَ

फिर न वह उठने की ताक़त रखते थे और न बदला ही ले सकते थे

46

وَقَوْمَ نُوحٍ ۚ مِّنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا ۚ قَوْمًا ۚ فَاسِقِينَ

और (उनसे) पहले (हम) नूह की क्रौम को (हलाक कर चुके थे) बेशक वह बदकार लोग थे

47

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ ۚ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ

और हमने आसमानों को अपने बल बूते से बनाया और बेशक हममें सब कुदरत है

48

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهْدُونَ

और ज़मीन को भी हम ही ने बिछाया तो हम कैसे अच्छे बिछाने वाले हैं

49

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

और हम ही ने हर चीज़ की दो दो क्रिस्में बनायीं ताकि तुम लोग नसीहत हासिल करो

50

فَفِرُّوا ۚ إِلَى اللَّهِ ۚ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

तो खुदा ही की तरफ भागो मैं तुमको यकीनन उसकी तरफ से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ

51

وَلَا تَجْعَلُوا ۚ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ ۚ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

और खुदा के साथ दूसरा माबूद न बनाओ मैं तुमको यकीनन उसकी तरफ से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ

52

كَذَلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا ۚ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ

इसी तरह उनसे पहले लोगों के पास जो पैगम्बर आता तो वह उसको जादूगर कहते या सिड़ी दीवाना (बताते)

53

أَتَوَاصَوْا ۚ بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ

ये लोग एक दूसरे को ऐसी बात की वसीयत करते आते हैं (नहीं) बल्कि ये लोग हैं ही सरकश

54

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ۚ

तो (ऐ रसूल) तुम इनसे मुँह फेर लो तुम पर तो कुछ इल्जाम नहीं है

55

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ

और नसीहत किए जाओ क्योंकि नसीहत मोमिनीन को फायदा देती है

56

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

और मैंने जिनों और आदमियों को इसी गरज़ से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें

57

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ؟ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا

न तो मैं उनसे रोज़ी का तालिब हूँ और न ये चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलाएँ

58

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ

खुदा खुद बड़ा रोज़ी देने वाला ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है

59

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ

तो (इन) ज़ालिमों के वास्ते भी अज़ाब का कुछ हिस्सा है जिस तरह उनके साथियों के लिए हिस्सा था तो इनको हम से जल्दी न करनी चाहिए

60

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ

तो जिस दिन का इन काफ़िरों से वायदा किया जाता है इससे इनके लिए ख़राबी है